* लिखित भाषा का अर्थ *

मानव अपने भाव, विचार एवं अनुभवों को अभिव्यक्त करने के लिए जिस समाज सम्मत ध्वन्यात्मक संकेत साधन का प्रयोग करता है, उसे उसकी मौखिक भाषा कहते है। जब इस भाषा को लिपि के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है तो उसे लिखित भाषा कहते हैं। किसी भाषा की लिपि का अर्थ उस भाषा की मूल ध्वनियों के लिए प्रयुक्त चिह्न विशेषों से होता है। इस प्रकार लिखित भाषा मौखिक भाषा का प्रतिरूप (स्वरूप) होती है।

मानव जीवन में भाषा के दोनों रूपों का बहुत महत्व है। वैसे तो व्यावहारिक जीवन में हम मौखिक भाषा का प्रयोग अधिक करते हैं परन्तु जीवन के मुख्य एवं स्थायी कार्य लिखित भाषा में होते हैं सामाजिक धार्मिक, राजनैतिक, मानव जीवन के सभी कार्यों को चलाने के लिए लिखित भाषा की आवश्यकता पड़ती है। विभिन्न कार्यालयों में समस्त विवरण लिखित भाषा के माध्यम से ही रखे जाते हैं मानव जीवन के सभी अनुभव - ज्ञान-विज्ञान, धर्म-दर्शन और महत्वाकांक्षाएं, ये सब भी लिखित भाषा के माध्यम से सुरक्षित रहते है। और एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी को हस्तान्तरित होते हैं मानव जाति की सभ्यता का प्रतीक उसका साहित्य लिखित भाषा की ही देन है।

* लिखित भाषा का महत्व *

लिखित भाषा मौखिक के रूप को परिमार्जित कर उसे निश्चित रूप प्रदान करती है।

लिखा किया हुआ (शुद्ध)

* यह मौखिक भाषा का स्थायित्व प्रदान करती है।
* जहाँ मनुष्य स्वयं नहीं पहुँच सकता वहाँ वह अपने विचार लिखित भाषा के माध्यम से पहुँचा सकता है।
* लिखित भाषा के माध्यम से ही हम एक पीढ़ी की उपलब्धियों को दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित करते हैं यह हमारे विकास का सबसे बड़ा आधार है।
* अपने विचारों भावों को मूर्त रूप देने तथा दूसरों तक पहुँचाने के लिए लिखित भाषा की आवश्यकता होती है।
उदाहरण - पत्र, लेख, पुस्तक,
* विभिन्न कालों की बदलती हुई परिस्थितियों, विचार-धाराओं तथा क्रियाकलापों से परिचित होने के लिए भाषा का लिखित रूप ही काम आता है। (विकास)
* लेखन के बिना साहित्य की अभिवृद्धि संभव नहीं है।
* हमलोग इतिहास के बारे में जानते हैं, क्योंकि हमारे इतिहास का बड़ा स्रोत साहित्य है।

* लिखित भाषा के तत्व *

प्रत्येक भाषा के अक्षरों को चिह्न विशेषों से प्रकट किया जाता है। इन चिह्नों विशेषों को उस भाषा की लिपि कहते हैं। लिखने की दृष्टि से लिपि का ज्ञान पहली आवश्यकता है। दूसरे स्तर पर शब्द ज्ञान और तीसरे स्तर पर सर्वमान्य वाक्य रचना का ज्ञान होना चाहिए। ये तीनों ही लिखित भाषा के मूल तत्व हैं। लिखित भाषा की शिक्षा का अर्थ है इन तीनों मूल तत्वों की शिक्षा। लेखक अर्थों के लिए प्रयुक्त शुद्ध लिपि चिह्नों को लिखे, शब्दों को उनके शुद्ध रूप में लिखे और व्याकरण सम्मत वाक्य लिखे, यह आवश्यक होता है।

① लिपि :- लिपि लिखित भाषा का मूलतत्व है। जब तक लेखक को इस लिपि का स्पष्ट ज्ञान नहीं होगा तब तक वह अपनी मौखिक भाषा को लिखित रूप नहीं दे सकता। हमारी हिन्दी भाषा में तो स्वतन्त्र ध्वनियों के अतिरिक्त कुछ संयुक्त ध्वनियां भी हैं और इन्हे भिन्न-भिन्न चिन्हों को संयुक्त रूप में प्रकट किया जाता है। हमारी भाषा की दूसरी विशेषता उसकी मात्राओं का प्रयोग है। भिन्न-भिन्न स्वरों की मात्राएं भिन्न-भिन्न रूपों में लगती हैं जैसे - इ (ि) ई (ी) इत्यादि।

② शब्द :- भाव, विचार एवं अनुभवों की अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्तम शब्दों का प्रयोग करना आवश्यक होता है। अतः लेखक का शब्द ज्ञान विस्तृत होना चाहिए। शब्द ज्ञान में दो बातें आती हैं — शब्द का शुद्ध उच्चारण एवं शुद्ध लेखन और उसका सही अर्थ जानना। हमारी भाषा में शब्दों की वर्तनी उनके शुद्ध उच्चारण पर निर्भर करती है इसलिए जब तक लेखक शब्दों का शुद्ध उच्चारण नहीं करेगा तब तक वह उन्हे शुद्ध रूप में लिख भी नहीं सकेगा। शब्दों का सही अर्थ जानना दूसरी आवश्यकता है। हमारी भाषा में पर्यायवाची शब्दों का बाहुल्य (सामर्थ्य / योग्यता) है, पर इन सब शब्दों में थोड़ा-थोड़ा अन्तर होता है। उदाहरण के लिए दिवाकर और प्रभाकर ~~निशाचर~~ दोनो ही सूर्य के पर्यायवाची शब्द हैं परन्तु इनके भाव भिन्न हैं। लेखक को विषय, भाव एवं अवसर आदि का ध्यान रखकर ही शब्दों का चयन करना चाहिए।

(निशाकर — निशाचर — रात में विचरण करने वाला
चंद्रमा — राक्षस)

③ वाक्य :- अभिव्यक्ति की इकाई वाक्य होने चाहिए वह मौखिक अभिव्यक्ति रूप से की जाए अथवा लिखित रूप से। भाषा अपने प्रयोजन में तभी खरी उतर सकती है जब लेखक सर्वमान्य वाक्य रचना करे। सर्वमान्य वाक्य रचना का अर्थ है व्याकरण सम्मत वाक्य रचना। वाक्य रचना के सम्बन्ध में दो बाते मुख्य हैं - पहला →

① लेखक वाक्य के पदों (शब्दों) को उनके उचित क्रम में प्रस्तुत करे और दूसरा वह विराम चिह्नों का उपयुक्त प्रयोग करे।

Exam- 'राम दशरथ के पुत्र थे।"/ पद बदलने पर 'दशरथ राम के पुत्र थे।" उल्टा अर्थ निकलेगा। पकड़ो मत, जाने दो। अर्थ विराम चिन्ह - पकड़ो, मत जाने दो।

* लिखित भाषा के उद्देश्य *

विद्यालयों में लिखित भाषा की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों को इसके द्वारा लिखित भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त विचारों को समझने और अपने भाव, विचार एवं अनुभवों को लिखित भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करने में निपुण करना होता है। उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हमें बच्चों को भाषा के तत्वों का ज्ञान कराना होता है, साहित्य की विभिन्न विधाओं और उनकी विभिन्न लेखन शैलियों का ज्ञान कराना होता है। उन्हे सुन्दर, सुडौल और स्पष्ट लेख लिखना सिखाना होता है। —

① ज्ञानात्मक उद्देश्य :-

* छात्रों को लिपि, शब्द, सूक्ति, लोकोक्ति और मुहावरों का ज्ञान कराना।
* छात्रों को शब्दों की शुद्ध वर्तनी, वाक्य रचना के नियम, विराम चिन्हों का प्रयोग और साहित्य की विभिन्न विधाओं एवं उनकी विभिन्न लेखन शैलियों का ज्ञान कराना।
* छात्रों को मानव जीवन से परिचित कराना।

② कौशलात्मक उद्देश्य :-

* छात्रों को शुद्ध उच्चारण, उचित आरोह- अवरोह एवं समझ पूर्वक सस्वर पठन करने और पूर्ण मनोयोग के साथ लक्ष्यपूर्वक मौन पठन करने में निपुण करना।
* छात्रों को सुन्दर लेख लिखने, शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखने और व्याकरण सम्मत वाक्य रचना में निपुण करना।
* छात्रों को विषयानुकूल भाषा-शैली का प्रयोग करने और अपने विचारों का तार्किक क्रम में अभिव्यक्त करने में निपुण करना।

③ भावात्मक उद्देश्य :-

* छात्रों में साहित्य अध्ययन एवं स्वाध्याय के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
* छात्रों में अपने ज्ञान एवं विचारों को लेख बद्ध करने की रुचि उत्पन्न करना।
* छात्रों में भाषा एवं साहित्य के प्रति आदर का स्थायी भाव बनाना।
* छात्रों को समाज, देश, जाति और धर्म के प्रति संवेदनशील बनाना।

भावुक
कोमल
स्वीकार करने के
योग्य
ग्रहण करने के
योग्य -

PDF File से

* गृहभाषा (मातृभाषा) तथा विद्यालयी भाषा *

गृहभाषा :- गृहभाषा से तात्पर्य उस भाषा से है जो बालक अपने घर पर बोलता है। यदि दूसरी भाषा में कहा जाये तो बालक जिस भाषा में अपने भाई, बहन और माता-पिता के साथ संवाद स्थापित करता है। गृह भाषा कहलाती है। मातृभाषा बालक अपनी माँ से सीखता है पर माँ की भाषा को मातृभाषा नहीं कहते है। बच्चा जन्म के बाद अपने परिवेश से जो भाषा सीखता है। उसे मातृभाषा कहते है।

भाषा विज्ञानियों के अनुसार बच्चों को ऐसी भाषा में पढ़ाने के विचार को समर्थन करते है। जो बच्चे आसानी से समझते है। वे मानते है कि बालक जब विद्यालय में आता है तो अपने सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश से काफी कुछ सीखकर आता है। इसे सीखने में उसकी भाषा भी शामिल होती है। इसलिए बच्चों को शुरुआती कक्षाओं में उनकी भाषा में ही पढ़ाना चाहिए। इससे बच्चो का शिक्षण एक ऐसी भाषा में होना सुनिश्चित किया जा सकेगा जिसके साथ वे सहज होंगे।

* यह भाषा बच्चों के घर में प्रयोग की जाने वाली होती है।
* यह वह भाषा है जो व्यक्ति की सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान बन जाती है।
* इस भाषा में हमारे स्वर यंत्र बड़ी सहजता से कार्य करते है।
* यह अनौपचारिक भाषा होती है जिसके व्याकरण की रीत हमें नहीं करनी चाहिए।

* प्रशासनिक भाषा की तुलना में गृह-भाषा बहुत ही सहज बोलचाल की और दैनिक वार्तालाप की प्रकृति वाली भाषा होती है।
* यह वह भाषा है जिसे बालक सर्वाधिक जानता है।
* इस भाषा में विद्यार्थियों के सीखने की सर्वाधिक संभावना होती है।
* इस भाषा को प्रथम भाषा या मातृभाषा कहा जाता है- क्योंकि इसका प्रथम परिचय इस भाषा से अपनी माँ के साथ अपने सगे संबंधियों के साथ प्रथम भाषिक-क्रिया कलापों के द्वारा होता है।

गृहभाषा या मातृभाषा का महत्व :-

बालकों को सही तरीके से पढ़ना सिखाना भी जरूरी है। पढ़ने के समझ के साथ प्रोत्साहित करने की जरूरत है। बालकों को उदाहरणों के माध्यम से भाषा का इस्तेमाल करने की कला से अवगत कराना चाहिए। निम्न बिन्दुओं के आधार पर मातृभाषा शिक्षा के महत्व को समझा जा सकता है।

① शिक्षा का आधार (Base of Education) ⇒ बालक की मातृभाषा शिक्षा का आधार होती है। इसे एक स्वतंत्र विषय के रूप में अध्ययन के साथ साथ शिक्षा के माध्यम के रूप में भी स्वीकार करना चाहिए। बालकों को लिखना और पढ़ाने के लिए भाषा शिक्षण की आवश्यकता होती है भाषा शिक्षा में मातृभाषा को ही स्वीकार करना उचित है।